B.A-I

Paper-II

9. एशिया को उच्चावचन विभागों में बाँटें तथा उनमें से प्रत्येक की भौतिक विशेषताओं का वर्णन करें
(Divide Asia into physiographic units and discuss the geographical characteristics of each region)

→ एशिया महादेश की विशालता के साथ ही यहाँ अनेक प्रकार की स्थलाकृतियाँ भी पाई जाती हैं। यहाँ के उच्चावचन को ~~निम्न~~ निम्न भागों में बाँटते हैं जो इस प्रकार हैं :—

(i) उत्तरी निचली भूमि (Northern lowlands)
(ii) मध्यवर्ती पर्वत पठारीक्रम
(iii) नदियों के मैदान
(iv) दक्षिणी प्रायद्वीपीय पठार
(v) पूर्वी द्वीप मालाएँ

(i) उत्तर का यह निचला मैदानी भाग त्रिभुजाकार रूप में साइबेरिया प्रदेश के विस्तृत भागों में फैला है। यह पश्चिम में कास्पियन से पूर्व में कमचटका द्वीप के पश्चिम तक फैला है। इसकी ढाल दक्षिण से उत्तर की ओर है। यह एक निचला मैदान है जो ओबी, येनेसी, तथा लीना नदियों के जलोढ़ों से बना है। इस मैदानी भाग की ढाल काफी मंद होने के कारण तथा मुहाने पर बर्फ जम जाने के कारण इसके उत्तरी भाग में जल फैल जाता है। इससे इस मैदान में बहुत सारे दलदली भूमि का विकास हो जाता है। तथा निचले उत्तरी भाग में नदियों का जल-प्रवाह रुक जाता है।

Scanned by TapScanner

(ii) मध्यवर्ती पर्वत पठारी क्रम एशिया के स्थल रूप में सबसे महत्वपूर्ण भाग है। एशिया के मध्य में फैली हुई ये उच्च श्रेणियाँ एशिया के 20% भाग से भी अधिक भाग पर फैला हुआ है। यह पर्वत क्रम टर्की से प्रारंभ होकर पूर्व में चीन तथा उत्तर-पूर्व में बेरिंग सागर तक फैला है। इस पर्वत पठारी क्रम के सामान्य ऊँचाई 1000 से 8848 मीटर है। इसमें अनेक पर्वत-पठार सम्मिलित है। इसका केन्द्र पामीर की गाँठ है जो विश्व की छत कहलाती है।

पामीर की गाँठ से मिलने वाली प्रथम पर्वत श्रेणियों का क्रम पश्चिम की ओर है। इसमें ये पर्वत-पठार सम्मिलित है —

(a) उत्तर प० की ओर हिन्दुकुश एवं एलबुर्ज है एलबुर्ज आरमीनियाँ की गाँठ में मिल जाती है।

(b) उत्तर दक्षिण की ओर गिलगिट, सुलेमान किरथर, एवं जाग्रोस है। जाग्रोस आरमीनियाँ की गाँठ में मिल जाती है।

(c) एलबुर्ज एवं जैग्रोस पर्वत के बीच ईरान का पठार स्थित है।

(d) आरमीनियाँ की गाँठ के पश्चिम की ओर दो श्रेणियाँ पॉन्टिक तथा टॉरस फैली है।

(e) पॉन्टिक तथा टॉरस श्रेणियों के मध्य एशिया माइनर का पठार स्थित है।

पामीर की गाँठ का दूसरा क्रम द० पू० की ओर है।

(a) पामीर की गाँठ से द० पूर्व की ओर हिमालय पर्वत है। इसकी सबसे ~~ऊँची~~ ऊँची माउन्ट एवेरेस्ट है।

(b) इसकी एक शाखा असम में नागा, गारो, खासी, जयंतिया तथा पटकोई के नाम से जाना जाता है।

पामीर की गाँठ से तीसरा क्रम पूर्व की ओर जाता है। इसमें ये पर्वत-पठार फैले है —

(a) पामीर की गाँठ से दक्षिण-पूर्व की ओर कुनलुन, क्यानकारा तथा निलिंग फैली है।

(b) पामीर की गाँठ से पूर्व की ओर दूसरी शाखा अल्टाइशान, नानशान, खिंगान है।

(c) हिमालय तथा कुनलुन के मध्य तिब्बत का पठार है जिसकी ऊँचाई 4500 मीटर है।

(d) हिमालय तथा कुनलुन के बीच काराकोरम ~~के बीच~~ की श्रेणी है।

पामीर की गाँठ से चौथा पर्वतीय क्रम उत्तर-पूर्व की ओर है। —

(a) इसमें तियेनशान, अल्टाई शान, याब्लोनोई तथा स्टेनोवाई है

(b) इसमें उत्तर-पूर्व की ओर वर्खोयान्स्क, केलिमा, अनादिर, कमचटका आदि है।

(c) तियेनशान तथा अल्टाईशान के बीच तारिम जेरिम तथा सिंकियांग का पठार स्थित है।

(iii) नदियों के मैदान (River Basins) :- एशिया के धरातल पर नदियों के अनेक मैदान मिलते है। ये अत्यंत उपजाऊ मैदान है ये नदी घाटियाँ प्राचीन सभ्यताओं के केन्द्र रहे है पश्चिम ~~से~~ पूर्व की ओर ~~से~~ मैदानों का क्रम इस प्रकार है —

(a) दजला-फरात का मैदान - इराक में।

(b) सिन्धु का मैदान - पाकिस्तान में।

(c) गंगा का मैदान - भारत

(d) ब्रह्मपुत्र का मैदान - बांग्लादेश में

Scanned by TapScanner

(e) इरावदी का मैदान - बर्मा में।
(f) मिनाम एवं मेकांग का मैदान - हिन्द चीन में
(g) सिक्यांग का मैदान - द० चीन में।
(h) यांगटीसिक्यांग का मैदान - द० चीन में।
(i) ह्वांग-हो का मैदान - उत्तरी चीन में।

ये सभी नदियों के मैदानी भाग लगभग समतल है और कृषि के दृष्टिकोण से काफी उपजाऊ है। ये मैदान नदियों के द्वारा लाई गई जलोढ़ मिट्टी से निर्मित है। इन मैदानी भागों में प्रत्येक साल नदियों के द्वारा उपजाऊ काँप मिट्टी की परत निक्षेपित होती है। अतः इनमें काफी उर्वरा शक्ति रहती है।

(iv) दक्षिणी प्रायद्वीपीय पठार (Southern Peninsular Palteaue):- एशिया महादेश के दक्षिण में कई पठार पाये जाते हैं। ये प्राचीन चट्टानों से निर्मित है। इन पठारी भागों में खनिज पदार्थों की प्रचुरता पायी जाती है। ये वास्तव में प्राचीन गोण्डवानालैंड के अवशिष्ट भाग हैं। इन पठारों में तीन प्रमुख हैं :-

(a) अरब का प्रायद्वीपीय पठार :- इसमें प्राचीन काल की रवेदार चट्टानें मिलती हैं। इनमें नीस, शिष्ट एवं ग्रेनाइट की प्रधानता है। इस पठार की सामान्य ऊँचाई 2000 मी० है। यह शुष्क मरुस्थलीय भाग है। इसमें बालू रेत के टीले भी मिलते हैं।

(b) भारत का प्रायद्वीपीय पठार :- यह भी प्राचीन गोण्डवानालैंड का एक भाग है। इसमें पश्चिमी घाट एवं पूर्वी घाट पर्वत श्रेणियों को भी सम्मिलित किया गया है। इसकी औसत ऊँचाई 1500 मि० है। उत्तर में विन्ध्य एवं सतपुरा पर्वत है और इन दोनों के बीच में मालवा का पठार है। दक्षिण में अजन्ता की पहाड़ी है। महाराष्ट्र राज्य में इस पठारी भाग पर ज्वालामुखी लावा का भी जमाव हुआ था। दक्षिण भाग में नीलगिरी एवं अन्नामलाई पर्वत फैले हैं। इसकी ढाल पश्चिम से पूरब की ओर है। अधिकांश क्षेत्र कट-छाँट के कारण ऊबड़-खाबड़ है। यहाँ की नदियाँ छोटी एवं तीव्रगामी हुआ करती है तथा अधिकांश नदियाँ सीधे समुद्र में मिलती है तथा मार्ग में जल प्रपात का निर्माण करती है।

(c) हिन्द चीन का पठार :- यह दक्षिणी-पूर्वी एशिया में फैला हुआ पठार है। इसमें शान, क्वीन्चाऊ तथा युनन के पठारी भाग सम्मिलित है। इसकी औसत ऊँचाई 1200 मीटर है। यह पठारी भाग भी काफी कटा-छँटा है।

(v) पूर्वी द्वीप समूह मालाएँ :- एशिया महादेश के दक्षिण पूर्व की ओर अनेक द्वीप एक पंक्ति में चाप की भाँति फैले हुए हैं। ये प्रशांत महासागर एवं हिन्द महासागर में फैले हुए है। इनका निर्माण Tertiary युग के पर्वतों के निर्माण के समय हुआ है। ये सभी द्वीप मोड़दार पर्वत के अभिनति (Anticline) पर स्थित है। इन द्वीपमालाओं में अनेक ज्वालामुखी पर्वत मिलते है। इनमें कुछ जाग्रत ज्वालामुखी भी मिलते हैं। इन द्वीपों में क्यूराइल

Scanned by TapScanner

सिंगापुर, आदि है।

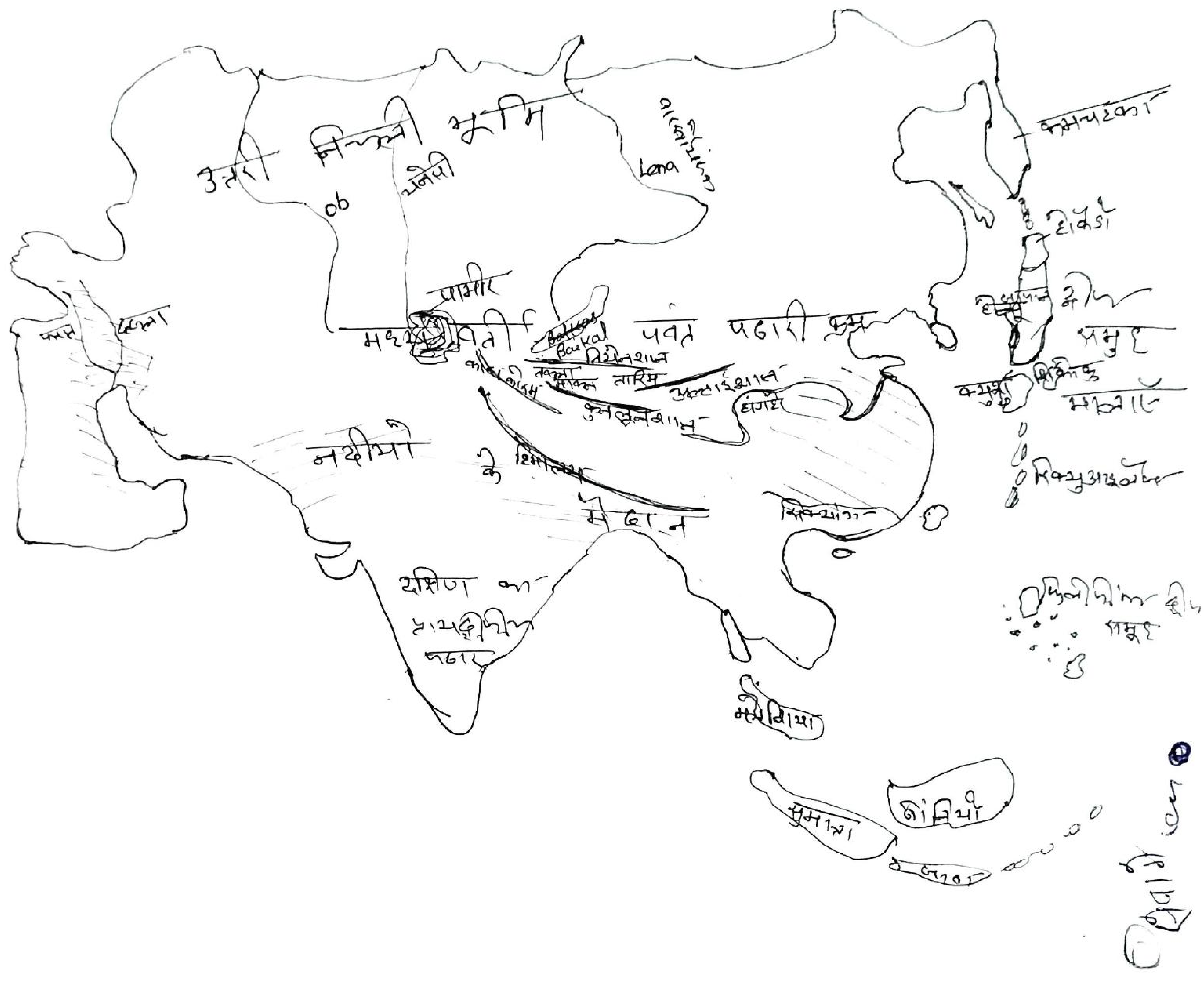

उत्तरी निम्न भूमि
ob
येनिसी
Lena
पामीर
पर्वत पठारी क्रम
Baikal
तारिम
हिमालय
नदियों के मैदान
दक्षिण का प्रायद्वीपीय पठार
सुमात्रा
बोर्नियो
समुद्र